Topic — BEFORE MODERNISM (पूर्व आधुनिकता)

Sol- पूर्व आधुनिकता शब्द से तात्पर्य आधुनिकता के पहले की स्थिति से है। पूर्व आधुनिकता का मतलब ऐसे दृष्टिकोण से है जो प्राचीन है। ऐसे स्थिति में विचारिक स्वतंत्रता में कमी, सोचने तथा ज्ञान प्रकट करने की शक्ति में कमी। पूर्व आधुनिकता में सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में परिवर्तन जिसके परिणामस्वरूप व्यक्तिगत और सामाजिक स्वतंत्रता कम मिलती है। उनका सम्बंध समाज के में व्याप्त समस्याओं को धार्मिक और रूढ़िवादी आधारों पर देखना न कि विवेक और ज्ञान पर देखा जाना है। इसका सम्बंध परम्परागत समाज से है। परम्पराओं पर आधारित समाज को परम्परागत समाज कहते हैं। इस प्रकार के समाजों की सामाजिक व्यवस्था में परम्पराओं का अत्यधिक प्रभावपूर्ण स्थान होता है जिसके फलस्वरूप समाज के सदस्यों के व्यवहार, सामाजिक अन्तः सम्बंध, अन्तः क्रिया आदि परम्पराओं के रंग में पर्याप्त रंग जाते हैं। परम्परात्मक समाज में विश्वास और ज्ञान की एक विशिष्ट प्रकृति होती है। ऐसे समाजों में धर्म की प्रधानता एवं विज्ञान की गौणता के कारण विभिन्न घटनाओं के सम्बंध में समाज के सदस्यों के ज्ञान में एक आध्यात्मिक एवं परम्परागत पुट देखने को मिलते हैं। इसी प्रकार के समाज के सदस्यों की आवश्यकताओं, लक्ष्यों और उद्देश्यों में एक 'विशिष्ट' प्रकार की एकरूपता या सामान्यता पायी जाती है। परम्परागत समाज में सदस्यों के पद एवं कार्य विशेष रूप में परम्परा के आधार पर ही निर्धारित होते हैं और उन्हें नियंत्रित करने का काम भी परस्पर जनमत, रूढ़ियों तथा प्रथाओं का ही

Ajanta PRODUCTS Officer

हुआ करता है। ऐसे समाजों में सामाजिक मान्यताओं तथा सत्ताओं का आधार कानून उतना नहीं है जितना कि धर्म, प्रथा, परम्परा, जनमत आदि। परम्परागत समाजों में जहाँ धर्म, प्रथा, परम्परा के अनुकूल किये गए कार्यों की सराहना की जाती है, वहीं उल्लंघन की भर्त्सना भी की जाती है। किसी-किसी परम्परात्मक समाजों में सदस्यों के कार्य और पद का निर्धारण जन्म के आधार पर भी हुआ करता है और उसी जन्म के आधार पर सामाजिक विभेदीकरण एवं स्तरीकरण का निर्धारण भी हुआ करता है। परम्परात्मक समाज का एक अन्य उल्लेखनीय आधार रूढ़िवादिता है। रूढ़िवादिता प्रगतिशीलता की विरोधी है। इसका एक परिणाम सामाजिक गतिशीलता एवं सामाजिक सहवासों के सम्बन्ध में अनेक प्रतिबंधों का लागू होना है, यद्यपि ये प्रतिबंध भी अंतिम एवं स्थिर नहीं होते हैं। समाज स्वयं ही कोई स्थिर धारणा नहीं है, चाहे वह समाज कितना ही रूढ़िवादी क्यों न हो।

पूर्व आधुनिकता समाज की विशेषताएँ निम्न प्रकार थी-

1 परिवार का विशेष महत्व (Special Significance of Family)— ऐसे समाज में परिवार को ही सामाजिक जीवन का एक आधारभूत इकाई माना जाता है। परिवार का प्रत्येक सदस्य अपने परिवार के प्रति एक विशेष श्रद्धा, प्रीति तथा आन्तरिक सम्पर्क (Attachment) रखता है। इसका प्रमुख कारण यह है कि ऐसे समाज में व्यक्ति की सामाजिक प्रतिष्ठा उसके आधार पर ही निर्भर करते हैं। व्यक्ति का परिचय उसके व्यक्तिगत गुणों के आधार पर नहीं, अपितु पारिवारिक अवस्थाओं के आधार पर निकट के नाते-रिश्तेदार की एक सहयोगी व्यवस्था पायी जाती है और जिसमें सम्मिलित सम्पत्ति, सम्मिलित वास, अधिकारों तथा कर्तव्यों का समावेश होता है। पितृसत्तात्मक संयुक्त परिवार में परिवार का संचालक और सम्पत्ति का व्यवस्थापक परिवार का सबसे वयस्क

पुराना सदस्य होता है। यह पद प्राय: पिता को प्राप्त होता है। समस्त कार्यों में उसका स्थान सर्वोच्च होता है, वही परिवार का जज और जूरी होता है। पारिवारिक झगड़ों का निपटारा करता है, वह राजनैतिक मुखिया होता है क्योंकि सामाजिक, धार्मिक और साम्प्रदायिक समस्त कार्यों में तथा स्थानीय गाँव-पंचायत में वही परिवार का प्रतिनिधित्व करता है। सामान्यत: परिवार के सब सदस्य एक ही प्रकार के धर्म, परम्परा आदि को मानते हैं और उनसे सम्बन्धित कर्तव्यों को सम्मिलित एवं वैयक्तिक रूप से निभाते हैं।

2. तुलनात्मक पृथकता (Comparative Isolation)

परम्परात्मक समाजों की दूसरी उल्लेखनीय विशेषता इनकी तुलनात्मक पृथकता है। ऐसे समाज धर्म, प्रथा, परम्परा, प्रवृत्ति आदि का एक ऐसे घेरा अपने चारों ओर डाल रखते हैं कि वे प्रगतिशील एवं मुक्त समाजों से स्वत: ही पृथक हो जाते हैं। प्राय: ऐसा देखा गया है कि परम्परात्मक समाजों में विज्ञान की प्रगति एवं शिक्षा का विस्तार कम होता है जिसके कारण इन समाजों में सामाजिक आविष्कार भी न्यूनतम ही होता है। अपनी अशिक्षा के कारण इन समाजों का सदस्य समाचारपत्र, पत्रिका, पुस्तकों आदि के माध्यम से अपना सम्पर्क दुनिया के साथ नहीं जोड़ पाते हैं। साथ ही कम आविष्कार के कारण यातायात तथा संदेशवाहन के आधुनिकतम साधनों से भी अधिक लाभ उठाना उनके लिए सम्भव नहीं होता है।

3. प्रौद्योगिकीय प्रगति का अभाव (Lack of Technological progress) — परम्परात्मक समाजों में विज्ञान की प्रगति कम होने के कारण आविष्कार भी कम होते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि ऐसे समाजों में प्रौद्योगिक प्रगति का अभाव होता है। बहुधा ऐसा पाया जाता है कि ऐसे समाजों में प्रौद्योगिकीय प्रगति का अभाव होता है। अनेक गृह उद्योग परिवार के आधार पर ही होते हैं। परिवार ही साधारणतया उत्पादन क्रिया के सम्पादन का स्थान होता है और परिवार के सदस्य ही उसके 'श्रमिक' होते हैं। जहाँ बाहरी श्रमिकों को भी रखने की आवश्यकता होती है, वहाँ भी उसके साथ

औद्योगिक समाजों की भाँति मालिक मजदूर का सम्बन्ध नही होता है मालिक और मजदूर एक साथ मिलकर काम करते हैं।

4 श्रम विभाजन और विशेषीकरण का अभाव (Lack of Specialisation and division of labour)

परम्परात्मक समाजों में बड़ी-बड़ी मशीनों द्वारा उत्पादन बहुत कम किया जाता है। इसलिए बड़े पैमाने पर उत्पादन करने का भी प्रश्न नही उठता है, जहाँ बड़े पैमाने पर उत्पादन नही होता है वहाँ श्रम विभाजन की भी आवश्यकता अनुभव नही की जाती है श्रम विभाजन के बिना श्रम का विशेषीकरण भी नही हो पाता है।

5. सामाजिक जीवन में एकरूपता — परम्परागत समाजों की सामाजिक भिन्नताओं का उग्र रूप देखने में नही मिलता है। केवल व्यवसाय या पेशे के सम्बन्ध में ही नही, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन में भी ऐसे समाजों के सदस्यों का जीवन बहुत कुछ एक सा होता है। ऐसे समाजों में कुछ मान्य या स्वीकृत सामाजिक आदर्श, मूल्य, प्रथा, परम्परा आदि होते हैं, जिन्हे सभी व्यक्तियों को अनिवार्य रूप से मानना पड़ता है और उन्हे न मानने पर समाज द्वारा उस व्यक्ति की निंदा की जाती है इस लोक निंदा के भय से समाज अपने को दूसरे के भाँति बनाने का प्रयत्न करते हैं। इससे भी सामाजिक जीवन में एकरूपता उत्पन्न होती है।

6. सामुदायिक भावना (Community Sentiment)

परम्परात्मक समाजों में पायी जाने वाली सामाजिक एकरूपता के फलस्वरूप ही ऐसे समाजों में सामुदायिक या हम की भावना स्वतः ही पनपती है। परम्परात्मक समाज वास्तव में छोटे-छोटे समुदायों में बंटा होता है इनके सदस्य एक-एक सीमित क्षेत्र के अन्तर्गत एक ही सांस्कृतिक प्रतिमान के बीच सामान्य जीवन बिताते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि ऐसे समुदायों के सदस्यों का पारस्परिक सम्बन्ध अत्याधिक घनिष्ठ हो जाता है और वे सब एक-दूसरे के सुख-दुख में सम्मिलित होते हैं इसको एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया सामुदायिक भावना का पनपता है

समाप्त